लता अग्रवाल 'तुलजा'

ई-मेल-agrawallata8@gmail.com

बैक बैंचर

स्कूल का वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा था, मुख्य अतिथि के रूप में विराजित थे शिक्षा मंत्री माननीय भोले राम शाह जी। स्कूल प्रबन्धन का हर एक शख्स आज अपने को गौरान्वित महसूस कर रहा था कि शिक्षा मंत्री जी ने आकर हमारे स्कूल को कृतार्थ कर दिया। बारी आई शिक्षा मंत्री जी के उद्बोधन की—

"प्यारे बच्चो, तुम्हें देखकर आज मुझे अपने बचपन के दिन याद आ गये। मैं भी ऐसे ही यूनिफोर्म पहनकर स्कूल जाता था। और मजे की बात बताऊँ, मैं बैक बेंचर था...क्योंकि मेरा मन पढ़ाई में बिलकुल नहीं लगता था। अपना होमवर्क भी मैं अपने साथियों से कुछ ले-दे कर करवा लेता था। अपना काम तो बस पीछे बैठकर शैतानी करना था। परिणामत: मेरे गुरुजन मुझसे परेशान हो पहले तो मुझे कक्षा के बाहर निकाल दिया करते थे। मैं वहाँ भी आते-जाते लोगों से बातें किया करता। उन्हें लगा, ऐसे तो मैं और उद्दंड हो जाऊँगा। सो, वे मुझे कक्षा में ही सबसे पीछे दोनों हाथ ऊँचे कर दीवार की तरफ मुँह कर खड़े होने की सजा देने लगे। बचपन तो ऐसा ही होता है... क्यों है न?" मंत्री जी मंच पर बैठे विद्वजन की और देखकर बोले।

"जी बिलकुल।" सभी एक स्वर में बोल पड़े।

"देखो, आज मैं देश का शिक्षा मंत्री हूँ...मुझे सजा देने वाले गुरूजी अब मेरे आगे हाथ जोड़कर खड़े रहते हैं। खैर, यह तो हुई मेरी बात। आप सबको भी बड़े होकर कुछ न कुछ बनना है...बोलो, बनोगे न ?"

"जी।" सभी बच्चे एक स्वर में बोले।

"अच्छा, तुम बताओ बबुआ...क्या बनोगे ?"

"बैक बेंचर बनूँगा सर।"